

॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

504



श्रीमद्भृजिदीक्षितप्रणीता

वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी

‘श्रीधरमुखोल्लासिनी’ हिन्दी व्याख्या-समन्विता

(प्रारम्भ से अव्ययान्त)

(प्रत्येक सूत्रों में पद-प्रदर्शन, समास, अनुवृत्तिक्रम, सूत्रार्थ,
भाष्य-मनोरमा-शेखर के अनुसार विस्तृत एवं सुगम व्याख्या,
प्रयोगसिद्धि, किलष्ट रूपों की सिद्धि, उणादिप्रकरण की
विशेष विवेचनात्मक व्याख्या एवं परिशिष्ट सहित)

(प्रथम भाग)

व्याख्याकारः

श्रीगोविन्दाचार्यः

सम्पादिका

लक्ष्मी शर्मा



चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

विषयानुक्रमणिका

१.	सञ्ज्ञाप्रकरणम्	०९९
२.	परिभाषाप्रकरणम्	१२४
३.	अच्चसन्धिप्रकरणम्	१५६
४.	प्रकृतिभावः	२६२
५.	हल्सन्धिप्रकरणम्	२८८
६.	विसर्गसन्धिप्रकरणम्	३३९
७.	स्वादिसन्धिप्रकरणम्	३६९
८.	अजन्तपुँलिङ्गप्रकरणम्	४०१
९.	अजन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम्	६४६
१०.	अजन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम्	७२५
११.	हलन्तपुँलिङ्गप्रकरणम्	७७१
१२.	हलन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम्	१००५
१३.	हलन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम्	१०२२
१४.	अव्ययप्रकरणम्	१०६७
१५.	सूत्रानुक्रमणिका	१०९९
१६.	वार्तिकानुक्रमणिका	१०९९
१७.	परिभाषानुक्रमणिका	११००

४ वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी का अध्यात्म विषय के लिए इसका उपयोग किया जाता है। इसका उपयोग वैयाकरण सिद्धान्त का अध्ययन करने के लिए किया जाता है। इसका उपयोग वैयाकरण सिद्धान्त का अध्ययन करने के लिए किया जाता है।

॥३० श्रीलक्ष्मीहयवदनपरब्रह्मणे नमः३०॥
॥श्रीनिवासमुक्तिनारायणरामानुजयतिभ्यो नमः॥

वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी

मुनित्रयं नमस्कृत्य तदुक्तीः परिभाव्य च।
वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीयं विरच्यते॥

श्रीधरमुखोल्लासिनी

स्वाचार्यं श्रीधरं शान्तं षडाचार्यं यतिं गुरुम्।
श्रीनिवासं मुक्तिनारायणं रामानुजं भजे॥१॥
श्रीधरार्यमुखोल्लासो भविष्यत्येव व्याख्यया।
छात्राणामुपकाराय सरला लोकभाषया॥२॥
सिद्धान्तकौमुदीपड़कितबोधिका प्रीतिकारिका।
गोविन्देन कृता व्याख्या तेन तुष्ट्यतु माधवः॥३॥

दण्डान्वयः:- (मया भट्टोजिदीक्षितेन) मुनित्रयं नमस्कृत्य तदुक्तीः परिभाव्य च
इयं वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी विरच्यते।

खण्डान्वयः:- मया विरच्यते। किं विरच्यते? इयं सिद्धान्तकौमुदी विरच्यते। किं
कृत्वा? मुनित्रयं नमस्कृत्य। पुनः किं कृत्वा? तदुक्तीः परिभाव्य।

पदपरिचयः:- (मया भट्टोजिदीक्षितेन तृतीयान्तम्) मुनित्रयं द्वितीयान्तं कर्मपदं,
नमस्कृत्य ल्यबन्तं क्रियापदं, तदुक्तीः द्वितीयाबहुवचनान्तं कर्मपदं, परिभाव्य ल्यबन्तं
क्रियापदम्, इयं प्रथमान्तं सर्वनाम कर्म, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी प्रथमान्तं मुख्यं कर्म,
विरच्यते मुख्यं क्रियापदम्।

अर्थः:- (मुझ भट्टोजिदीक्षित के द्वारा) तीनों मुनियों (पाणिनि, ऋत्यायन
और पतञ्जलि) को नमस्कार करके और उनकी सदुक्तियों का विचार, विवरण
करके इस वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी नामक ग्रन्थ की रचना की जा रही है।
पद्यानुसार यह कर्मवाच्य का वाक्यार्थ है।